भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-12, अंक-2-4 मंगलवार, 25 अप्रैल' 89	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00 प्रति अंक : 1.00

प.पू स्वामिश्री की जयंती अवसर पर.....

अहो.....हो.....परम आनंद की बेला, अत्यंत मंगलकारी घड़ी नजदीक आ रही है....4 मई, हमारे समग्र गुणातीत समाज के प्राण समान सदा दिव्य साकार स्वरूप गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की 55वीं जयंती.... ! प्रभु की मूर्ति में अलमस्त व मूर्तिस्वरूप विभूति की जयंती..... !!

हमारे पुण्य का तो कोई पार नहीं है, जो कोई जप, तप, व्रत, उपासना, साधना किये बिना मौज में प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, प.पू. साहेब जैसे परम सारथी मिल गये हैं। इतिहास साक्षी है कि अर्जुन के सारथी श्रीकृष्ण परमात्मा थे, तो अर्जुन के बाहरी व आन्तरिक कुरुक्षेत्र का बोझ उन्होंने अपने माथे पर ले लिया था। आज यदि हम अर्जुन को भाग्यशाली मानें और खुद को नहीं तो इसमें भूल किसकी? हममें से कईओं ने स्वामिश्री का जीवन अपनी दृष्टि से निहारा है। उनकी गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति की अप्रतिम गुरुभक्ति का बेजोड़ अनुपम संबंध अपने आप में ही एक अनूठी मिसाल है। गुणातीत पुरुषों स्वयं ही ऐसा जीवन जीते हैं, जिससे उनके संबंध में आने वाले सेवकों को पल-पल हर प्रसंग पर सही प्रेरणा, सूझ व भक्ति अदा करने की रीति और स्वरूपों को पहचानने की निगाह मिलती ही रहती है। प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी, गुरुहरि योगीजी महाराज के समय में कितने ही हरिभक्तों के बीच में रहते थे, लेकिन कभी भी किसी को जरा भी इशारा या सलाह नहीं दी। उनकी नजर सदैव केवल योगीजी महाराज की ओर.....मेरे गुरु को जो जँचता है वह पल-पल की सेकेण्ड-सेकेण्ड की प्रवृत्ति, अनुवृत्ति और स्वीकृति....। किसी के दोष, स्वभाव, प्रकृति की तरफ मन-बुद्धि को कभी भी जाने नहीं दिया। केवल 'तूं ही....।' जब से बापा के संबंध में आये.....तब से जीवन का एक ही निशान था ''बापा दिव्य है और उनके अल्प संबंध वाले भी दिव्य है। बापा ही ठीक है,.....हितकारी है, कल्याणकारी है।'' इस रीति से ही सेवन करके बापा के दिल को सच्ची हाश करा दी। इसके फलस्वरूप दीक्षा देते समय

बापा के आशीर्वाद सहज ही फिसल पड़े ! ''तुम्हें माया पराभव (हरा) नहीं कर सकेगी।'' बापा ने इतना कहा ही नहीं, बल्कि सच में उनके इस सर्जन कोहिनूर हीरे की अनोखी अद्‌भुत चमक आज सहज ही हरेक को स्वयं में आकर्षित कर लेती है। जो भी एक बार भी प.पू. स्वामीजी की सौम्य, निर्दोष, निरपेक्ष मूर्ति का दर्शन मात्र करता है वह हमेशा के लिये उनसे बंध जाता है।

स्वाभाविक ही हम सबको प्रश्न उठने ही वाला है कि गुरु जयंती पर हम अपने गुरु को क्या भेंट दें? परंतु अब यह सत्य छिपा नहीं रहा कि इन गुणातीत स्वरूपों को क्या पसंद है? वह हमसे क्या कराना चाहते हैं। आज गुणातीत समाज का हरेक व्यक्ति जानता है कि गुणातीत स्वरूपों अपने संबंध में आये हरेक की चेतना के ऊर्ध्वगामी विकास के लिये बिना किसी स्वार्थ के अनथक् परिश्रम कर रहे हैं। उनकी अब हमसे एक ही अपेक्षा है कि हम सबमें सच्ची आत्मीयता प्रगटें.... हम सब सही अर्थ में प्रभु के खानदानी पुत्र बनें।

प.पू. स्वामीश्री के साथ हमारी ऐसी गुणातीत प्रीति कैसे दृढ़ हो, वह नीचे लिखी उनकी परम सत्यवाणी स्पष्ट दर्शन कराती है। हम सब उनकी इस वाणी के मर्म को सोचेंगे, विचारेंगे और हमारे जीवन में लाने की सुरुचि मात्र भी रखेंगे....तो भी ये करुणासिंधु इसे भी हमारी भक्ति मानकर स्वीकार लेंगे। आओ...आओ.....हम सब मिल-जुलकर गुरु जयंती पर कहीं और निगाह रखें बिना केवल एक इन गुणातीत स्वरूपों की ओर निगाह रखकर जीने कृत-निश्चयी हो....। यही हमने सही अर्थ में गुरु जयंती मनाई।

प.पू. स्वामिश्री की परावाणी

....चार-पांच प्रकार से प्रीति भगवत्स्वरूप संत के साथ बढ़ती जाती रहती है।

पहला लक्षण–

हम सब साधक हैं। साधक के जीवन में संघर्ष आने ही वाला है–अनिवार्य है। हरेक प्रसंग में जो प्रभु का ही सिर्फ बल ले, सिर्फ भजन करे–प्रार्थना करे, तो उसकी प्रीति प्रभु की ओर प्रभु सहज बढ़ायेंगे। जीवन में संघर्ष नहीं होगा तो सहराई नहीं होगी, जीवन में संघर्ष नहीं होगा तो आत्मा का प्लेटफार्म मजबूत नहीं बनेगा। जीवन में संघर्ष जितना अधिक इतनी प्रीति की गहराई अधिक। इतना ही प्रभु के स्थापित बनने के लिये प्लेटफार्म मजबूत बनेगा। इसलिये अंतर से संकल्प करना– हरेक प्रसंग में मैं सिर्फ भजन-प्रार्थना-मूर्ति का ही बल लूं। गुरुजी ने बहुत ही भजन किया है। गुरुजी ये मार्गे गया और काकाजी के साथ अद्वितीय संबंध कर डाला।

दूसरी बात–

प्रसंग अनिवार्य है। मगर, जिस व्यक्ति हरेक प्रसंग में Positive होगी और हरेक प्रसंग में सिर्फ गुण ही लेती रहेगी, तो उसकी प्रीति प्रभु बुद्धियोग उसको देकर बढ़ायेंगे। जिस प्रकार से गुरुजी का जितना गुण हम लेते रहेंगे, इतनी ही प्रीति उनके साथ बढ़ती रहेगी। हमारे वहां प्रीति का Top पात्र है सर्वेश्वर। हरेक प्रसंग में सर्वेश्वर ने सिर्फ गुण ही लिया, केवल Positive thinking केवल Positive स्वीकार, केवल Positive हलन चलन, केवल Positive ही दर्शन !

तीसरी बात–

जितना ही वचन में विश्वास और श्रद्धा होगी, इतनी ही प्रीति गुणातीत पुरुष के साथ–गुरुजी के

साथ बढ़ती जायेगी। मैं तीसरा लक्षण दिखाता हूँ। वचन में विश्वास और श्रद्धा दोनों का समन्वय अनिवार्य है।

जितना ही वचन में विश्वास और श्रद्धा, इतनी ही प्रीति ज्यादातर बढ़ती रहेगी। प्रभु बुद्धि योग देगा, सच्ची प्रीति वो करायेगा। उसका है Sample कोठारी स्वामी।

प्रीति का चौथा लक्षण–

तु सुप्रीम, सर्वोपरी–सर्व कर्ताहर्ता, तु ही मंगलकारी-हितकारी मूर्ति, तु ही सर्व गुण सम्पन्न सर्व सौन्दर्यवान और मूर्ति, तु ही मेरा सर्वस्व आधार–तु ही एक ही आधार, आपके सिवा कोई बल नहीं है। आपके सिवा कोई बुद्धि नहीं है। ऐसा माहात्म्य ज्ञान सहित विचार जिसका जीवन में एक धारा स्थित हुआ है और ऐसा जिसका संबंध हो उसकी प्रीति उत्तरोत्तर बढ़ती जाती रहती है।

माहात्म्य ज्ञान से प्रीति बढ़ाया काकाजी ने और महंत स्वामीजी ने। तो आज मैं ये बात करने के लिये आया हूँ। आप लोगों की जिम्मेदारी खूब ही है, खूब ही...। पूर्व का संस्कार तो ठीक बात है। आप लोगों पर काकाजी ने सिर्फ करुणा ही बरसाई है सिर्फ....। ये प्रीति काकाजी की आपकी ओर कितनी होगी? Unmeasurable! You can't Calculate the Heart! प्रीति का ख्याल कैसे आ सकता है? मगर प्रीति का ख्याल ऐसे आ सकता है कि प्रभु ने स्वीकार कर लिया–बस ! हम लोग **पात्र-अपात्र** था ही नहीं, जीवन में कुछ ही नहीं था। मगर काकाजी ने साहस किया, मगर काकाजी ने संकल्प किया–बस, आप लोग सुखी हो जाओ। आप लोग मेरे स्वरूप को पहचानो। आप लोग मेरी प्रीति को पहचानो। ऐसी एक मंगलकारी भावना से आप लोगों को गोद में ले लिया। और अन्ततः गुरुजी को सौंप दिया। आप लोगों की जिम्मेदारी इतनी बढ़ती जा रही है, जब काकाजी ने संकल्प किया और गुरुजी अप्रतिम परिश्रम उठा रहा है तब आपकी एक ही जिम्मेदारी है। **रोज देखना, रात्रि को सोच-विचार में डूबे रहना, फिर अन्तर्दृष्टि करना**, 'मेरी प्रीति गुरुजी की ओर कितनी बढ़ती जा रही है वच. म. 50 के मुताबिक? प्रीति का सर्वोत्तम सर्वोपरी वचनामृत म.50 वचनामृत में प्रभु ने कहा है मेरा अन्तर–'गुणातीत'। इसके अन्तर में जब मैं देखता हूँ तभी उसके अन्तर में कोई राग नहीं है, कोई महोब्बत नहीं है, कोई सारप नहीं है। सिर्फ गुणातीत के अन्तर में मेरा ही स्थान है। ऐसा गुणातीत प्रीति वाले भक्त पर मुझे अप्रतिम विश्वास है। महाराज ने बोला है गुणातीत का ही सिर्फ मेरे को विश्वास है। और दूसरे परमहंसों, सांख्ययोगियों के अंतर की तरफ जब मैं देखता हूँ तब प्रीति की बहुत ही कचास-कसर दिखाई पड़ती है। ये कसर है–**संपूर्ण** प्रीति की कक्षा नहीं है। परमहंसों को मालूम नहीं था कि सच्ची प्रीति हम कैसे कर सकें। प्रीति का सर्वोत्तम एक ही लक्षण–'तुं ही'। तुं ही मेरे लिये सर्वस्व, तुं ही एक मेरा आधार। तुं ही एक मेरा बल, तुं ही एक मेरा सुख, तुं ही एक मेरी शांति, तुं ही एक मेरा सौन्दर्य, तुं ही मेरा सर्व प्रसंग में अक्षरधाम, तुं ही एक मेरी श्रद्धा, तुं ही मेरा प्रेम–विश्वास, तुं ही मेरा जीवन। ऐसी एक मंगलकारी भावना हममें जग उठी है कि नहीं? कितने Percentage में मेरा संबंध है? ऐसा अन्तर्दृष्टि करके दिल से देखना और सच्ची प्रीति व.म. 50, 11, म. 13, प्र. 37, 27–पं.–4, 7, लो–7, 8 मुजब मेरी ऐसी प्रीति है कि नहीं–तलाश करना, देखना, प्रार्थना करना। मगर प्रीति इस प्रकार से बढ़ाते

जाना, बस। प्रीति को हम Perfect बनायें। प्रीति को हम सर्वोपरी बनायें। प्रीति में हम 'सिर्फ तुं ही....' की मंगलकारी भावना प्रकटायें। प्रीति का अंतिम चरण और पूर्णाहुति–सिर्फ निराकार हो के साकार में गुम हो जाना–खलास हो जाना।

तो मैंने आपको चार लक्षण दिखाया है।

पहला लक्षण–हर प्रसंग में भजन, प्रार्थना का ही बल।

दूसरा लक्षण–Positive विचार, सिर्फ केवल गुण ही लेता रहूँ, हर प्रसंग में, हर व्यक्तियों से, दूसरा और कुछ नहीं।

तीसरा लक्षण–वचन में सिर्फ विश्वास और श्रद्धा।

चौथा लक्षण–माहात्म्य ज्ञान सहित भक्ति, आप अकेला ही Supreme सर्वोपरी.....I must only follow you and you, Him and him only and only तो ये चार प्रकार की भावना से प्रीति बढ़ाने के लिये अवश्य प्रयत्न करना। प्रीति में गहराई होना चाहिये। प्रीति में संबंध ही होना चाहिये। प्रीति में केवल प्रभु की Supremacy होनी चाहिये।

मैं एक बात बतलाता हूँ–सुनिये–हम हिम्मतनगर की ओर जा रहे थे। काकाजी हमारे साथ था कार में। आप लोगों को सबको मालूम तो है कि काकाजी बहुत ही भजन करता था। राजकोट से निकलकर अहमदाबाद तक–साढ़े तीन घंटे तक एक धारा बस–बस करता ही रहा–करता ही रहा। अहमदाबाद 30 K.M. दूर रहा तो काकाजी ने आंखें खोलीं। मैंने पूछा–काकाजी इतनी धून क्यों? **काकाजी ने बोला–मैं और आप–**मैंने बोला **'मैं मत बोलना, 'हम सब'। मैं और आप एकावधानी** बनके जीवन जी सकें इसलिये मैंने स्वामीजी से प्रार्थना किया। एकावधानी Means–दूसरा कोई आकार नहीं। मेरे लिये दूसरा कोई आकार न रहे, उसको हम एकावधानी कहते हैं। दूसरी कोई व्यक्ति का Negative मनन चिंतन नहीं। और एकावधानी Means–केवल हरेक प्रसंग में 'तुं ही....'। मेरी बुद्धि और मेरा बल किंचित न हो, नाम शेष न हो–किंचित भी, थोड़ा-सा भी नहीं। Total विसर्जन !मेरा मुछ में कुछ नहीं। आप ही मेरा सर्वस्व, तेरा ही बल मेरा आधार, तेरी शक्ति मेरा प्राण, तेरी दृष्टि मेरी साधना, तेरा आशीर्वाद ही मेरा संबंध। तो आप लोगों की जिम्मेदारी बहुत है। इसलिये ये बात करने के लिये मैं आया हूँ। आप सिर्फ केवल गुरुजी के लिये बस सिर्फ जियो, केवल....। सेवा सबकी करो, आत्मीय बनके सेवा करो। मगर भावना एक ही–'आप ही बस.....केवल तुं.....।'

.....हम हिम्मतनगर जा रहे थे काकाजी के साथ !

अहमदाबाद से हमारी कार स्टार्ट हुई। दो घंटे का रास्ता था। हिम्मतनगर पहुँचा। काकाजी एक मिनिट के लिए कुछ बोले नहीं। दो संत थे, दो युवक–एक काकाजी–पांच हम कार में बैठे हुए थे। एक मिनिट के लिये कुछ बोले नहीं। रात्रि को हम पैर दबा रहे थे, सेवा कर रहे थे। मैंने काकाजी से पूछा कि आप दो घंटे तक कौन से विचार में थे? काकाजी ने कुछ नहीं बोला। सुबह 4 बजे वो जागे। साढ़े पांच बजे स्वामीजी (योगीबापा) जागते थे। वो भी हिम्मतनगर में थे। आधे घंटे में काकाजी तैयार हो गया। आधा घंटा काकाजी ने बहुत बात करी। उसी वक्त एक बात बतलाई। कल मैं अहमदाबाद से स्टार्ट हुआ, हिम्मतनगर आया, एक ही विचार में आया। मेरी वृत्ति, मेरी समझदारी, मेरी शक्ति, मेरा सब गुण, ऐश्वर्य, प्रताप, ताकत सब, मैं उसका आनंद प्राप्त करता हूँ या योगीजी महाराज का, बस? दो घंटे तक एक ही विचार में मैं डूबा हुआ था।

मैं एक ही विचार में आया। मैं मेरी बुद्धि में हूँ? मेरी शक्ति में हूँ? मैं मेरे कोई आनंद में हूँ? मैं कोई और व्यक्तियों में हूँ? मेरा जीवन में किसका आनंद है? मेरा जीवन का बल कौन है? मैं एक ही विचार में आया। काकाजी अपने लोगों को ये सिखाते थे। दो घंटे ! 1962 की मैं बात करता हूँ।

वो सिखाना मांगते हैं कि आप सिर्फ डूबा रहो, प्रयत्न करो। कई सालों से नहीं, अनन्त सालों से जीव का एक ही स्वभाव है; स्वबल से, स्वबुद्धि से, स्वविचारों से जो जीवन जीता है उसको जीव कहा जाता है। सिर्फ प्रभु का बल से जो जीवन जीता है उसको हम भक्त और एकांतिक कहते हैं। मेरी अन्तर से एक ही भावना है आप लोग सब साढ़ तीन सालों में योगी शताब्दी के अवसर पे, वो सनातन मावतर का प्रागट्य दिने हम वो स्वामीजी का, वो काकाजी का लाडले पुत्र बने रहे, बन जाये। पुत्र का लक्षण क्या? एक ही लक्षण–'तुं ही'....और सबकी विस्मृति ! ऐसा हम पुत्र बन जाये। इसलिये हम दिल से,अंतर से आलोच रखे। आलोच Means ध्येय Destination। आलोच Means एक वृत्ति यही निशान पे रहे। हम सेवा करें, निशान वो ही। हम भजन करें, निशान वो ही। हम हिलमिल के आत्मीयता से उठाव लें, निशान वो ही। मैं व.म. 50 के मुताबिक एक पवित्र पुत्र बन जाऊं, बस एक आत्मीय सेवक बन जाऊं। ऐसी एक मंगलकारी भावना से जीये और प्रार्थना करे। आप लोगों की खूब जिम्मेदारी है–फिर से बोलता हूँ। काकाजी का वो एक संकल्प मूर्तिमान करने की आप लोगों की जिम्मेदारी है। जिस विश्वास से काकाजी ने अपन सबको गोद लिया, जिस विश्वास से काकाजी ने अपने लहू का पानी करके, अप्रतिम परिश्रम उठाके चैतन्य को श्रेय पथ पर चलाने के लिये, सच्चा सुझाव देने के लिये, सच्चा संबंध कराने के लिये, बहुत ही परिश्रम किया। तो, वो खानदान, मां-बाप के हम सब लड़के हैं। हमारे जीवन में दो चीज होनी चाहिये– खानदानी और खमीर! हम खानदान मां-बाप के लड़के हैं। हम खमीरवान मां-बाप के लड़के हैं। खानदानी और खमीर काकाजी के जीवन में सहज दिखाई पड़ती थी। उसकी हर हलन चलन में खमीरता दिखाई पड़ती थी। और हरेक सेकेण्ड में भक्तों की ओर उसकी खानदानी सहज दिखाई पड़ती थी। वो सच्चा खानदान खमीरवान सेवक–योगीजी महाराज का प्राण प्यारा वो संत ! वो काकाजी ने दिल से अंतर से संकल्प किया–आप लोगों को सुखी करने के लिये। आप लोगों ने वो दर्शन, आशीर्वाद पाया ही है। तो, अंतर से–दिल से ऐसा पुत्र बनने के लिये सुरुचि रखना। सुरुचि Means-Constant and Continuous flow for each and every Second to please Him. हरेक सेकेण्ड को उसको राजी करने के लिये जुटना, उमंग-आलोच-अभीप्सा-प्रार्थना-हलन चलन। उसको हम सुरुचि कहते हैं। मन बुद्धि का विरोध भी होगा। मैंने जो बात बतलाई वैसी प्रीति आज हो जाये ऐसी है नहीं। हम ऐसी प्रार्थना रखेंगे तो जरूर से ऐसी प्रीति होने ही वाली है। प्रीति जरूर से होगी–ऐसी सब श्रद्धा विश्वास से भजन और सेवा करना। क्या होगा? कैसे होगा? योग्य नहीं हूँ, अयोग्य हूँ, भजन नहीं कर सकता हूँ–ऐसा कोई विचार में फंसने की कोई आवश्यकता है नहीं। वो उसकी जिम्मेदारी है, बस। उसका संकल्प है। हम Improper ही था, Proper था ही नहीं, सत्पात्र ही नहीं था। मगर उसकी प्रीति कैसी? बस वो ही सोचो।

मंगलवार, 14 मार्च' 89
दिल्ली

Statement about Ownership and other particulars about newspaper

'भगवत-कृपा'— 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukundjivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
4. Publisher's Name	:	
Nationality	:	above
Address	:	
5. Editor's Name		
Nationality	:	above
Address	:	
6. Owner's Name	:	
Nationality	:	above
Address	:	

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- **Sadhu Mukundjivandas**

Date: 25th March, 1989 Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	2.5.89	मंगलवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	3.5.89	बुधवार	योगी जयंती
3.	दि.	4.5.89	गुरुवार	प्रगट ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती
4.	दि.	9.5.89	मंगलवार	ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज की अंतर्ध्यान तिथि
5.	दि.	14.5.89	रविवार	श्रीहरि जयंती
6.	दि.	16.5.89	मंगलवार	एकादशी, व्रत
7.	दि.	20.5.89	शनिवार	पूर्णिमा

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7119525
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110032